International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.educationjournal.in
ISSN: 2455-4588
Received: 17-08-2022, Accepted: 03-09-2022, Published: 20-09-2022
Volume 7, Issue 3, 2022, Page No. 131-134

प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में कार्टून चरित्रों के प्रति रूचि के सन्दर्भ में अभिभावकों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन

Asmita Koli[1], Bhanu Prakash[2]
[1] Researcher, Department of Education, Khandelwal College of Management Science and Technology, Bareilly, Uttar Pradesh, India
[2] Associate Professor, Department of Education, Jyoti College of Management Science and Technology, Bareilly, Uttar Pradesh, India

सारांश
प्राचीन काल से ही हमारे देश में शिक्षा को बहुत महत्व दिया गया है। शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है। शिक्षा के बिना मनुष्य को पशु के समान समझा जाता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करती है, उसको सामाजिक स्वरूप प्रदान करती है। शिक्षा मानव योग्यता एवं व्यवहार को विकसित करती है। प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा की धुरी है। प्राथमिक शिक्षा को सर्व सुलभ बनाये बिना सर्वे शिक्षा अभियान जैसे कार्यक्रमों की सफलता पर संदेह किया जा सकता है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा सामान्यतः कक्षा 1–5 तक की शिक्षा को कहा जाता है। कार्टून मुख्य रूप से बच्चों के लिए है। वह आमतौर पर समाचार पत्रों, हास्य पुस्तकों और पत्रिकाओं में मुद्रित होते है या उन्हें टेलीविजन पर प्रसारित किया जाता है। कार्टून पहले केवल मनोरंजन के उद्देश्य से थे लेकिन इन दिनों के कार्टून बड़े पैमाने पर अन्य उद्देश्यों के लिए भी उपयोग किये जा रहे है। अभिवृत्तियाँ बहुत कुछ सीमा तक किये जाने वाले व्यवहार के लिए उत्तरदायी ठहराई जा सकती है। परन्तु इससे यह नहीं समझा जाना चाहिए कि व्यक्ति का व्यवहार सम्पूर्ण रूप में उसकी अभिवृत्तियों पर ही निर्भर करता है।

मूलशब्दः प्राथमिक स्तर, टेलीविजन, अभिवृत्ति

प्रस्तावना
शिक्षा का अर्थ क्या यह नहीं है कि विभिन्न समस्याओं का सामना करने के लिए वह आपको समर्थ बनाए। यह आवश्यक है कि इन सभी समस्याओं का ठीक ढंग से सामना करने के लिए आपको शिक्षित किया जाए। यही शिक्षा है, न कि मात्र कुछ परीक्षाएँ पास कर लेना, कुछ विषयों का, जिनमें आपकी रूचि बिल्कुल नहीं है, उनका अध्ययन कर लेना। सम्यक शिक्षा वहीं है जो विद्यार्थी की इस जीवन का सामना करने में मदद करें, ताकि वह जीवन को समझ सकें, उससे हार मान न ले, उसके बोझ से दब न जाए, जैसा कि हम में से अधिकांश लोगों के साथ होता है। लोग, विचार, देश, जलवायु, भोजन, लोकमत यह सभी कुछ लगातार आपको उस खास दिशा में ढकेल रहे हैं, जिसमें कि समाज आपको देखना चाहता है।

प्राथमिक शब्द का सामान्य अर्थ है– प्रारम्भिक, मुख्य तथा आधारभूत। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य प्रारम्भिक अथवा आधारभूत शिक्षा से है। प्रारम्भिक स्तर पर सम्पन्न होने के कारण प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है।

यह वह प्रकाश है जो बालक की मूल प्रवृत्तियों का परिमार्जन कर उसे आदर्श, संस्कारवान तथा संतुलित व्यक्तित्व प्रदान करती है। बालक के उज्जवल शैक्षिक भविष्य के निर्माण में प्राथमिक शिक्षा की विशेष भूमिका होती है। यह मानव मात्र के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। विहानों ने इसे ज्ञान के हार की कुंजी कहा है।

आज के समय में बालकों की कार्टून देखने में रूचि बहुत बढ़ गयी है। टी0वी0 नामक एक इडियट बॉक्स बच्चों को बहुत प्रभावित करता है इसके साथ ही टी0वी0 कार्यक्रम मनोरंजक है जो बच्चों को सकारात्मक तथा नकारात्मक रूप से प्रभावित करते है। बचपन कच्ची मिट्टी की तरह होता है। बच्चे को जिस प्रकार का वातावरण प्राप्त होता है वह उसी वातावरण में ढल जाता है। टेलीविजन कार्यक्रम इस वातावरण का एक हिस्सा है जो बच्चे के विकास को प्रभावित करता है इसलिए यह माता–पिता को समझने की आवश्यकता है कि बालक को टेलीविजन कार्यक्रम किस प्रकार प्रभावित करते है। बालक बहुत समय तक टेलीविजन पर प्रोग्राम देखते है। छोटाभीम और मोटू पतलू जैसे कार्टून कार्यक्रम बालक को अच्छी शिक्षा प्रदान करने में सहायक है जो बालक को सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते है वहीं दूसरी ओर कुछ कार्टून कार्यक्रम टॉम एण्ड जेरी और डोरेमॉन कार्यक्रम जिसमें नोविता (पात्र) कभी भी अपनी मॉ की बात नहीं मानता इस प्रकार से नकारात्मकता के दृष्टिकोण को दर्शाता है।

अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के प्रति एक खास ढंग से अनुक्रिया करने की एक मानसिक तत्परता होती है। अभिवृत्ति में व्यक्ति में अनुकूलता, प्रतिकूलता की बिना पर किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के प्रति अनुक्रिया करने की तत्परता पाई जाती है। अभिवृत्तियाँ बहुत कुछ सीमा तक किये जाने वाले व्यवहार के लिए उत्तरदायी ठहराई जा सकती है। परन्तु इससे यह नहीं समझा जाना चाहिए कि व्यक्ति का व्यवहार सम्पूर्ण रूप में उसकी अभिवृत्तियों पर ही निर्भर

करता है। व्यक्ति का व्यवहार हर एक स्थिति में उसके व्यक्तित्व की अपनी विशेषताओं और स्थिति, जिससे वह व्यवहार कर रहा होता है, दोनों का ही संयुक्त परिणाम होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि बालक सीखे गये विषयों को जल्द ही भूल जाता है लेकिन जिसको वह अपनी आँखों से देखता है उसे वह कभी नहीं भूलता है यही कारण है कि कार्टून चरित्रों का व्यापक प्रभाव बालक के मस्तिष्क व उसके व्यवहार पर पड़ता है। पिछले दिनों में भारत सहित अनेक देशों में कार्टून चरित्रों के प्रभाव की अनेक घटनायें जिन्हें दुर्घटनायें कहना अधिक उपयुक्त होगा, घटित हुई है। सुपरमैन की तरह उड़ने के प्रयास में ऊँची बिल्डिंग से छलांग लगा देना या टार्जन की तरह पेड़ की एक डाल से कूदना इत्यादि।

बच्चों में इन चरित्रों के प्रति बढ़ता आकर्षण न केवल शिक्षकों, समाज शास्त्रियों बल्कि स्वयं बालकों के लिये भी एक समस्या बनता जा रहा है। जिसका समाधान करना अति आवश्यक हो गया है क्योंकि इससे सर्वाधिक प्रभाव बालकों के मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास पर पड़ रहा है। जिस समय बालक कार्टून देखता है उस समय उसकी सांवेगिक स्थिति का भी उस पर प्रभाव पड़ता है। यदि बालक उस समय किसी कारणवश अत्यधिक चिन्तित डरा हुआ एवं घबराया हुआ होता है तो स्वभावतः उसका ध्यान चित्रों तथा कार्टून पर नहीं होता है लेकिन जिस समय वह कार्टून देखता है उस समय वह अपने किसी भी कार्य को भूल जाता है। बालक का पूरा ध्यान उस चित्रण में होता है। अतः हमें यह जानना अति आवश्यक है कि कुछ समय बाद इसका बालक के जीवन पर क्या परिणाम हो सकता है इसे समझना हमारे लिये अति आवश्यक हो जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से इस समस्या के प्रति माता–पिता एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति को जानने एवं इसके समाधान हेतु उपयोगी सुझाव प्राप्त किये जा सकते है। प्राथमिक स्तर पर प्रारम्भिक जीवन में विकसित मनोस्थिति का उनके आने वाले जीवन पर प्रभाव पड़ता है। उनके व्यवहार के तौर–तरीकों में जो कार्टून चरित्रों की देन होते है उनमें परिवर्तन बहुत धीमी गति से ही सम्भव होता है। वह भी जब इसके लिये सार्थक प्रयास व प्रारम्भ किये जाये तो बालकों पर पारिवारिक संस्कारों का प्रभाव एवं कार्टून खेलों का प्रभाव बालक के विकास को प्रभावित करते है इससे बालक केवल अपना मनोरंजन नहीं करता है बल्कि वे उसे संवेगात्मक रूप से प्रभावित करते है। बालक कार्टून में अपनी ही छवि को देखते है जिसे देखकर वे अपने आपको उसकी तरफ आकर्षित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से माता–पिता एवं शिक्षकों को उन उपायों से अवगत कराया जा सकता है जिनको अपनाकर वे अपने बालकों को कार्टून की छदम दुनिया से बाहर ला सकें।

समस्या कथन

प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में कार्टून चरित्रों के प्रति रूचि के सन्दर्भ में अभिभावकों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

प्राथमिक स्तरः प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 1 से 5 तक के शिक्षा स्तर से है।

विद्यार्थीः प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थी से तात्पर्य कक्षा 1 से 5 तक में पढ़ने वाले बालक–बालिकाओं से है।

कार्टून चरित्रः प्रस्तुत शोध में विभिन्न टी0वी0 चैनलों पर दिखाये जाने वाले चरित्र कार्टून डोरिमोन, पोकोमैन, सिन्चैन इत्यादि से है।

अभिभावकः प्रस्तुत शोध में अभिभावक पद से तात्पर्य कक्षा एक से आठ तक में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के माता–पिता एवं संरक्षकों से है।

शिक्षकः प्रस्तुत शोध में शिक्षक पद से तात्पर्य प्राथमिक स्तर पर कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से है।

अभिवृत्तिः अभिवृत्ति मानव के दैनिक जीवन में व्यक्ति के उस दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है, जिसके कारण वह किसी वस्तु परिस्थिति, संस्था, व्यवस्था या व्यक्ति के प्रति किसी विशिष्ट प्रकार का व्यवहार व्यक्त करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में कार्टून चरित्रों के प्रति रूचि के सन्दर्भ में अभिभावकों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में कार्टून चरित्रों के प्रति रूचि के सन्दर्भ में शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना। (लिंग के आधार पर)

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में कार्टून चरित्रों के प्रति रूचि के सन्दर्भ में अभिभावकों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में कार्टून चरित्रों के प्रति रूचि के सन्दर्भ में महिला एवं पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन

1. प्रस्तुत अध्ययन जनपद बरेली तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु कुल 111 अभिभावकों एवं शिक्षकों का चयन किया गया है।

3. प्रस्तुत अध्ययन केवल प्राथमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में चर के रूप में केवल अभिवृत्ति को चुना गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

कॉन्ड्री (2017): के अनुसार, टेलीविजन से बच्चों को क्या अनुभव होता है, जानकारी को समझने की क्षमता, रील और रियल के बीच मानसिक तुलना का अध्ययन कराता है। वहीं दस से कम उम्र के बच्चों को दिखाए गए कार्यक्रमों में वास्तविक और रील स्थितियों के बीच अन्तर को समझना कठिन होता है इसलिए विशेषरूप से उन कार्टून कार्यक्रमों पर वे टेलीविजन ने प्रभावों के प्रति संवेदनशील हैं।

वार्टल्स, हिंइल्ज, एडमैन और माजरेला (2019): ने कहा कि कार्टून कार्यक्रम बच्चों के पसंदीदा थे। कार्यदिवस के अधिकांश कार्टून कार्यक्रम 5 बजे के बीच प्रसारित किए गए 9 बजे और 90: सप्ताहांत में दोहराया गया। पिछले अध्ययनों में दो कारणों से विचार किया गया था। शाम को कार्टून प्रोग्राम जो टेलीकास्ट होते हैं, शाम के समय में कई तरह के कार्टून कार्यक्रम होते हैं जो छोटे बच्चे और किशोर को आकर्षित करते हैं। शाम को कार्टून कार्यक्रम देखना विशेषकर के लिए नकारात्मक पहलुओं का अनुभव करने की भारी सम्भावना की माँग करता है। (5–14 वर्ष तक) दूसरे ओर विशेष एपिसोड का प्रसारण स्कूल टाईमिंग के बाद एक हफ्ते में कई बार लोकप्रिय कार्टून कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस प्रकार पुनरावृत्ति का अवांछनीय प्रभाव हो सकता है।

ओलिवर और ग्रीन (2020) के द्वारा किये गये एक अध्ययन से पता चलता है कि कार्टून टेलीविजन कार्यक्रमों में निश्चित विचार या छवि निश्चित कास्टिंग का समर्थन कर सकती हैं। दर्शकों के बीच और विशेषरूप से बच्चों के लिए यौन विशेषताओं पुरूष–महिला लक्षण वर्णन में यह मतभेदों को बढ़ा सकता है।

कार्डोजा, कविथा (2020) के अनुसार, विदेशी कार्यक्रमों और चैनल को देखने के लिए माता–पिता अपने बच्चों को प्रोत्साहित नहीं करते थे क्योंकि उन्हें ऐसा लगा विदेशी टेलीविजन कार्यक्रमों में उपयोग किये जाने वाले दृश्य और संवाद बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं थे। वे अधिक क्षेत्रीय कार्यक्रमों की उम्मीद करते हैं जो हमारे सांस्कृतिक मूल्यों को पकड़ें। बच्चों के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले कार्टून कार्यक्रम में नैतिक संदेश बताना चाहिए। कार्यक्रमों का अन्त जैसे कि झूठ न बोलना, एकता और धैर्य आदि पर होना चाहिए।

नवाथे आनन्द (2021): विज्ञापन के प्रभावों के निष्कर्षों की सूचना दी। लगभग 84 प्रतिशित बच्चे भोजन करते समय टी.वी. देखते हैं। लगभग 78 प्रतिशित बच्चे कार्टून चैनल देखते हैं इसलिए वे वहाँ दिखाए गए पात्रों और उत्पादों के लिए अधिक उजागर हैं, जो बच्चों में खाने की बुरी आदतों को आमंत्रित कर सकते हैं। अनुमानित अधिकांश विज्ञापन फास्ट फूड और कोल्डड्रिंक से सम्बन्धित है और स्वस्थ आहार के बारे में नहीं। सर्वेक्षण में शामिल लगभग 62 प्रतिशित माता–पिता ने कहा कि वे विज्ञापनों पर चर्चा करते हैं। बच्चे किसी विशेश उत्पाद को ज्यादातर इसलिए खरीदते हैं क्योंकि उसने उसे देखा है टेलीविजन पर या दोस्त के पास है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में बरेली जनपद के अभिभावकों एवं शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा बरेली जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के 111 अभिभावकों एवं शिक्षकों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

अध्ययन का उपकरण

स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

फलांकन प्रक्रिया

उक्त ''कार्टून चरित्रों के प्रति अभिवृत्ति मापनी'' में अभिवृत्ति से सम्बन्धित पाँच विकल्प दिये गये थे। सकारात्मक कथन पर पूर्णता सहमत के लिए 5 अंक, सहमत के लिए 4 अंक, तटस्थ के 3 अंक, असहमत के लिए 2 अंक तथा पूर्णता असहमत के लिए 1 अंक प्रदान किये गये तथा नकारात्मक कथन पर पूर्णता सहमत के लिए 1 अंक, सहमत के लिए 2 अंक, तटस्थ के 3 अंक, असहमत के लिए 4 अंक तथा पूर्णता असहमत के लिए 5 अंक प्रदान किये गये।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

अभिवृत्ति से सम्बन्धित आँकड़ों का संकलन करने के पश्चात् शोधार्थिनी द्वारा आँकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण करने के लिए ''प्रतिशत विधि'' का प्रयोग किया गया। अतः इसमें सामान्यतः प्रतिशतांक ही निकाला गया है।

निष्कर्ष

1. 45.16 प्रतिशत शिक्षकों ने पूर्णतः सहमति जताई। बालक कार्टून कार्यक्रम देखते समय ही अपना भोजन करना पसन्द करते है। इस सम्बन्ध में लगभग 40.82 प्रतिशत अभिभावकों ने पूर्णतः सहमति जताई।
2. बालकों को कार्टून अत्यधिक पसन्द है। इस सम्बन्ध में 48.38 प्रतिशत शिक्षकों ने पूर्णतः सहमति जताई जबकि 46.94 प्रतिशत अभिभावकों ने पूर्णतः सहमति जताई।

3. 53.22 प्रतिशत शिक्षकों ने पूर्णतः सहमति जताई। इस सम्बन्ध में कि बालक कार्टून कार्यक्रम देखने के लिए जिद्द करते है जबकि 38.78 प्रतिशत अभिभावकों ने पूर्णतः सहमति जताई।
4. 46.78 प्रतिशत शिक्षकों ने पूर्णतः सहमति जताई। कार्टून कार्यक्रम देखने में बच्चों देखने में बच्चों का मन ज्यादा लगता है बजाय अन्य कार्यक्रम देखने के जबकि इस सम्बन्ध में लगभग 42.86 प्रतिशत अभिभावकों ने पूर्णतः सहमति जताई।
5. बालकों का अधिकांश समय टेलीविजन पर कार्टून कार्यक्रम देखने में गुजरता है। इस सम्बन्ध में 50.00 प्रतिशत शिक्षकों ने पूर्णतः सहमति जताई जबकि 53.06 प्रतिशत अभिभावकों ने पूर्ण सहमति जताई।
6. अधिक समय तक कार्टून देखना बालकों के शारीरिक विकास को प्रभावित करता है। इस सम्बन्ध में 46.79 प्रतिशत शिक्षकों ने पूर्णतः सहम सहमति जताई बल्कि लगभग 37.02 प्रतिशत अभिभावकों ने पूर्णतः सहमति जताई।

शैक्षिक निहितार्थ

1. ऐसे कार्यक्रमों के प्रसार की अनुमति न दे जिनमें अश्लीलता, हिंसा, आक्रामकता का अत्यधिक प्रयोग किया गया हो तथा ऐसे कार्टून कार्यक्रम पर प्रतिबन्ध लगाए जोकि इस तरह के कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं।
2. शक्षक बालकों को ऐसे कार्यक्रम देखने के लिए प्रोत्साहित करें जो विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्यों को श्रेष्ठ बनाने की दृष्टि से उपयोगी हो। टी0वी0 के बहुत से कार्यक्रम जनमत निर्माण के लिए सशक्त साधन है। अध्यापक कार्टून कार्यक्रम से प्रसारित की गई सूचनाओं, जानकारियों, कहानियों, कविताओं में दी गई। शिक्षा को अपने शिक्षण में जोड़ सकते हैं तथा अपने शिक्षण को प्रभावी बन सकते है तथा सहायक सामग्री के रूप में उपयोग कर सकते है।
3. माता–पिता सारा दिन बच्चों को कार्टून कार्यक्रम न देखने दें। उनका टी0वी0 देखने को समय निर्धारित करें। अभिभावक बालकों को ऐसे पारिवारिक धारावाहिकों को देखने के लिए प्रोत्साहित करें जिनके माध्यम से बालकों में परिवार के प्रति आदर व सम्मान के मूल्य विकास करवायें जा सकें।

सुझाव

1. प्रस्तुत शोध केवल 111 अभिभावक एवं शिक्षकों पर किया गया है। इससे बड़ा न्यादर्श लेकर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षकों एवं उनमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। अतः भविष्य में आवासीय व गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों पर भी यह अध्ययन किया जा सकता है।
3. इस शोध कार्य में कासगंज जिले के यू0पी0 बोर्ड एवं सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावक एवं शिक्षकों पर किया गया है। इसे अन्य प्रान्तों के जिले स्तर पर भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है। इसमें आई0सी0एस0ई0 बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों को भी शामिल किया जा सकता है।
5. कार्टून कार्यक्रम का विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर सकते है।
6. कार्टून कार्यक्रम के प्रभाव में शैक्षिक स्तर की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। अतः इन चरों के प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रतियोगिता दर्पण (1996) आगरा, उपकार प्रकाशन, 212वॉ अंक, मार्च।
2. राय, पी0एन0 (1999): 'अनुसन्धान परिचय', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।
3. अस्थाना, विपिन (2000): मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. गुप्ता, एस0पी0 (2001): आधुनिक मापन और मूल्यांकन, इलाहाबाद, शाखा पुस्तक भवन, विश्वविद्यालय रोड।
5. सिंह, गजराज एवं कामिल्य, चित्रा (2006): 'दर्पण' पश्चिमी क्षेत्र विद्या भारती शिक्षा संसाधन।
6. कार्डोजा, कविथा (2002): पेरेंटल कन्ट्रोल ओवर चिल्ड्रन्स टेलीविजन विविंग एच इण्डिया, साउथ एशिया, 11(2), 135–161।
7. नवाथे आनन्द (2007): रिर्पोटेड डैट इम्पैक्ट ऑफ एडवरटाइजिंग ऑन चिल्ड्रन (टी0वी0 कार्टून्स विद् वाइलेन्स वर्सस विद् नो वाइलेन्स)।
8. के0ई0, ए0जे0, एस0आर0 डालकोस्टा, एट0एल0 (2008): टेलीविजन वियोण्डः चिल्ड्रन विडियो मिडिया इन वन कम्यूनिटी कम्न्यूनीकेशन रिसर्च, 17, 45–64।
9. एट0एल0 (2009): मल्टीमीडिया एप्लीकेशन विद् एनीमेटेड कार्टून्स फॉर टीचिंग साइंस इन एलीमेन्टरी एजूकेशन, कम्प्यूटर एण्ड एजूकेशन, 52(4), 741–748।
10. कबाप्रार (2009): इफैक्टिवनैस ऑफ टीचिंग वाय कान्सैप्ट कार्न्टून्स फ्रॉम द पाइंट ऑफ वियू ऑफ कन्सट्रक्टिव अप्रोच्।